**अंकन योजना**
**पूरी तरह से गोपनीय**
**(केवल आंतरिक एवं प्रतिबंधित उपयोग के लिए)**
**सीनियर सेकेंडरी स्कूल पूरक परीक्षा, 2025**
**विषय नाम : इतिहास (027) (क्यूपी कोड 61/एस/2)**

**सामान्य निर्देश: -**

| | |
|---|---|
| **1** | आप जानते ही हैं कि अभ्यर्थियों के वास्तविक और सही मूल्यांकन में मूल्यांकन सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी सी गलती गंभीर समस्याओं का कारण बन सकती है जिसका असर अभ्यर्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और शिक्षण पेशे पर पड़ सकता है। गलतियों से बचने के लिए, आपसे अनुरोध है कि मूल्यांकन शुरू करने से पहले, स्पॉट मूल्यांकन दिशानिर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझें। |
| **2** | **"मूल्यांकन नीति एक गोपनीय नीति है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं, मूल्यांकन और कई अन्य पहलुओं की गोपनीयता से संबंधित है। किसी भी तरह से इसका सार्वजनिक रूप से लीक होना परीक्षा प्रणाली को पटरी से उतार सकता है और लाखों उम्मीदवारों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। इस नीति/दस्तावेज़ को किसी के साथ साझा करने, किसी पत्रिका में प्रकाशित करने और समाचार पत्र/वेबसाइट में छापने आदि पर बोर्ड और आईपीसी के विभिन्न नियमों के तहत कार्रवाई हो सकती है।"** |
| **3** | मूल्यांकन अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया जाना चाहिए। यह किसी की अपनी व्याख्या या किसी अन्य विचार के अनुसार नहीं किया जाना चाहिए। अंकन योजना का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। **हालाँकि, मूल्यांकन करते समय, जो उत्तर नवीनतम जानकारी या ज्ञान पर आधारित हैं और/या नवीन हैं, उनकी सत्यता का अन्यथा मूल्यांकन किया जा सकता है और उन्हें उचित अंक दिए जा सकते हैं। कक्षा-12 में, दो योग्यता-आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय, कृपया दिए गए उत्तर को समझने का प्रयास करें और यदि उत्तर अंकन योजना के अनुसार नहीं है, लेकिन परीक्षार्थी द्वारा सही योग्यता दर्शाई गई है, तो भी उचित अंक दिए जाने चाहिए।** |
| **4** | अंकन योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मूल्य अंक दिए गए हैं।<br>ये केवल दिशानिर्देश हैं और संपूर्ण उत्तर नहीं हैं। छात्र अपनी अभिव्यक्ति स्वयं व्यक्त कर सकते हैं और यदि अभिव्यक्ति सही है, तो उसके अनुसार उचित अंक दिए जाने चाहिए। |
| **5** | प्रधान परीक्षक को पहले दिन प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता द्वारा मूल्यांकित प्रथम पाँच उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन करना होगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि मूल्यांकन अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया गया है। यदि कोई भिन्नता हो, तो विचार-विमर्श और चर्चा के बाद उसे शून्य कर दिया जाना चाहिए। मूल्यांकन के लिए शेष उत्तर पुस्तिकाएँ केवल यह सुनिश्चित करने के बाद ही दी जाएँगी कि प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता के अंकन में कोई महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं है। |
| **6** | मूल्यांकनकर्ता वहाँ (√) का निशान लगाएँगे। गलत उत्तर के लिए 'X' का निशान लगाएँगे। मूल्यांकनकर्ता सही उत्तर के लिए ( ✓ ) का निशान नहीं लगाएँगे। मूल्यांकन करते समय ऐसा लगता है कि उत्तर सही है और कोई अंक नहीं दिए जाएँगे। **यह सबसे आम गलती है जो मूल्यांकनकर्ता करते हैं।** |
| **7** | यदि प्रश्न में भाग हैं, तो कृपया प्रत्येक भाग के लिए दाईं ओर अंक दें। प्रश्न के विभिन्न भागों के लिए दिए गए अंकों का योग करके उन्हें बाईं ओर हाशिये में लिखकर गोला बना दें। इसका कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। |
| **8** | यदि किसी प्रश्न में कोई भाग नहीं है, तो अंक बाएँ हाशिये पर दिए जाने चाहिए और उसे घेर दिया जाना चाहिए। इसका भी कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। |
| **9** | **"अतिरिक्त प्रश्न"** लिखकर काट दिया जाना चाहिए । |

| | |
|---|---|
| **10** | किसी त्रुटि के संचयी प्रभाव के लिए कोई अंक नहीं काटा जाएगा। इसके लिए केवल एक बार ही दंड दिया जाएगा। |
| **11** | अंकों का पूर्ण पैमाना _____80____ ( उदाहरण के लिए प्रश्नपत्र में दिए गए 0 से 80/70/60/50/40/30 अंक) का उपयोग करना होगा। यदि उत्तर योग्य हो, तो कृपया पूर्ण अंक देने में संकोच न करें। |
| **12** | प्रत्येक परीक्षक को अनिवार्य रूप से पूरे कार्य समय अर्थात प्रतिदिन 8 घंटे मूल्यांकन कार्य करना होगा तथा मुख्य विषयों में प्रतिदिन 20 उत्तर पुस्तिकाओं तथा अन्य विषयों में प्रतिदिन 25 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना होगा (विवरण स्पॉट दिशा-निर्देशों में दिया गया है)। यह कम पाठ्यक्रम तथा प्रश्न-पत्र में प्रश्नों की संख्या को ध्यान में रखते हुए किया गया है। |
| **13** | सुनिश्चित करें कि आप परीक्षक द्वारा अतीत में की गई निम्नलिखित सामान्य प्रकार की गलतियाँ न करें:-<br>● उत्तर पुस्तिका में उत्तर या उसका कोई भाग बिना मूल्यांकन के छोड़ देना।<br>● किसी उत्तर के लिए निर्धारित अंक से अधिक अंक देना।<br>● किसी उत्तर पर दिए गए अंकों का गलत योग।<br>● उत्तर पुस्तिका के अंदर के पृष्ठों से अंकों का गलत स्थानांतरण मुख्य पृष्ठ पर होना।<br>● शीर्षक पृष्ठ पर प्रश्न के अनुसार कुल योग गलत है।<br>● शीर्षक पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का गलत योग।<br>● ग़लत कुल योग.<br>● शब्दों और आंकड़ों में अंक मेल नहीं खा रहे हैं/समान नहीं हैं।<br>● उत्तर पुस्तिका से ऑनलाइन पुरस्कार सूची में अंकों का गलत स्थानांतरण।<br>● उत्तरों को सही के रूप में चिह्नित किया गया है, लेकिन अंक नहीं दिए गए हैं। (सुनिश्चित करें कि दायाँ टिक मार्क सही और स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यह केवल एक रेखा होनी चाहिए। गलत उत्तर के लिए X का चिह्न भी ऐसा ही है।)<br>● उत्तर का आधा या एक भाग सही तथा शेष गलत चिह्नित किया गया, लेकिन कोई अंक नहीं दिया गया। |
| **14** | उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते समय यदि उत्तर पूर्णतः गलत पाया जाए तो उस पर क्रॉस (X) का निशान लगाकर शून्य (0) अंक दिया जाना चाहिए। |
| **15** | किसी भी अनिर्धारित भाग, अंकों को शीर्षक पृष्ठ पर न ले जाना, या कुल योग में अभ्यर्थी द्वारा पाई गई त्रुटि, मूल्यांकन कार्य में लगे सभी कर्मियों और बोर्ड की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाएगी। इसलिए, सभी संबंधितों की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए, यह पुनः दोहराया जाता है कि निर्देशों का सावधानीपूर्वक और विवेकपूर्ण ढंग से पालन किया जाए। |
| **16** | परीक्षकों को वास्तविक मूल्यांकन शुरू करने से पहले " **स्पॉट मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश " में दिए गए दिशानिर्देशों से परिचित होना चाहिए।** |
| **17** | प्रत्येक परीक्षक यह भी सुनिश्चित करेगा कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन किया गया है, अंक शीर्षक पृष्ठ पर अंकित किए गए हैं, सही योग किया गया है तथा अंकों और शब्दों में लिखा गया है। |
| **18** | अभ्यर्थी निर्धारित प्रसंस्करण शुल्क का भुगतान करके अनुरोध करने पर उत्तर पुस्तिका की फोटोकॉपी प्राप्त करने के हकदार हैं। सभी परीक्षकों/अतिरिक्त प्रधान परीक्षकों/प्रधान परीक्षकों को एक बार फिर याद दिलाया जाता है कि वे यह सुनिश्चित करें कि मूल्यांकन प्रत्येक उत्तर के लिए अंकन योजना में दिए गए मान बिंदुओं के अनुसार सख्ती से किया जाए। |

# सेट 61/S/2
## अंक योजना 2025
## इतिहास(027)

**अंक योजना में पृष्ठ संख्या नवीनतम एन. सी. ई. आर. टी. ई-बुकसे ली गई हैं** **अतिकिम अंक : 80**

| क्र. सं. | खण्ड क | च / पृष्ठ | एम केएस |
|---|---|---|---|
| 1 | (D) I, II और III | अध्याय 6 पृष्ठ 152-155 | 1 |
| 2 | (A) I और II | अध्याय 5 पृष्ठ 118 | 1 |
| 3 | (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है। | अध्याय 5 पृष्ठ 116 | 1 |
| 4 | (C) पुजारी-राजा<br><br>नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित अभ्यर्थियों के लिए है, प्रश्न संख्या 4 के स्थान पर।<br>(B) पाकिस्तान | अध्याय 1 पृष्ठ 16<br><br>अध्याय 1 पृष्ठ 2 | 1<br><br>1 |
| 5 | (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं परंतु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है। | अध्याय 3 पृष्ठ 60 | 1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6 | (B) a-iv, b-iii, c-ii, d- i | अध्याय 2 पृष्ठ 44, 45 | 1 |
| 7 | (B) चोल, चेर , पांड्य | अध्याय 2 पृष्ठ 35 | 1 |
| 8 | (C) I और IV | अध्याय 1 पृष्ठ 20 | 1 |
| 9 | (C) इसमें पाठ के सभी क्षेत्रीय रूपों पर शोध किया गया। | अध्याय 3 पृष्ठ 54 | 1 |
| 10 | (A) I और II | अध्याय 1 पृष्ठ 17 | 1 |
| 11 | (C) भजन | अध्याय 6 पृष्ठ 163 | 1 |
| 12 | (D) जमा | अध्याय 8 पृष्ठ 213 | 1 |
| 13 | One marks to be given to all. | | 1 |
| 14 | (A) निकोलो दे कॉन्ती – इटली | अध्याय 7 पृष्ठ 176 | 1 |
| 15 | (A) वाजिद अली शाह का कुशासन | अध्याय 10 पृष्ठ 266 | 1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 16 | (D) III, I, II, IV | अध्याय 9 पृष्ठ 241–242 | 1 |
| 17 | (B) अहमदुल्ला शाह | अध्याय 10 पृष्ठ 263 | 1 |
| 18 | (B) a-iii, b-ii, c-iv, d- i | अध्याय 12 पृष्ठ 330–333 | 1 |
| 19 | (C) जवाहरलाल नेहरू | अध्याय 12 पृष्ठ 322 | 1 |
| 20 | (C) I, III, IV, II | अध्याय 11 पृष्ठ 314 | 1 |
| 21 | (B) सुभद्रा कुमारी चौहान | अध्याय 10 पृष्ठ 283 | 1 |
| | **खंड ख**<br>**(लघु उत्तरीय प्रश्न)** | | |
| 22. | **(क) "इतिहासकारों ने हड़प्पा की मुहरों को विशिष्ट कलाकृति माना है।" इस कथन की परख कीजिए।**<br>उत्तर :<br>i. सेलखड़ी से बनी वर्गाकार या आयताकार आकार की मुहरें। | अध्याय 1, पृष्ठ 15 | 3 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ii. लेखन (लिपि का अर्थ स्पष्ट न हो पाना) और शिल्प कौशल का प्रमाण प्रदान करें।<br>iii. उस प्राधिकारी के अस्तित्व को इंगित करें जिसने शक्ति जारी की/प्रयोग किया।<br>iv. मेसोपोटामिया के साथ व्यापार के साक्ष्य, मेसोपोटामिया में हड़प्पा की मुहरें मिलीं और इसके विपरीत;<br>v. मुहरों पर नाव की छवि.<br>vi. हड़प्पावासियों की मान्यताओं को प्रतिबिंबित कर सकता है - कूबड़ वाला बैल, आदि शिव।<br>vii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>( (मूल्यांकन किए जाने वाले कोई तीन अंक)<br>**या**<br>**( ख) " हड़प्पावासी अपनी उन्नत नगरीय योजना के लिए जाने जाते थे।" उपयुक्त तर्कों के साथ इसे न्यायसंगत ठहराइए।**<br>उत्तर :<br>i. बस्ती दो भागों में विभाजित थी, एक छोटा लेकिन ऊंचा और दूसरा बहुत बड़ा लेकिन निचला। (दुर्ग और निचला शहर)<br>ii. इमारतें मिट्टी की ईंटों के चबूतरों पर बनाई गई थीं।<br>iii. निचला शहर ऊपरी शहर से अलग था और उसे चारदीवारी से घेर दिया गया था।<br>iv. सभी निर्माण कार्यों के लिए मानकीकृत अनुपात में ईंटों के उपयोग की विस्तृत योजना का संकेत दिया गया है।<br>v. सड़कें और गलियाँ लगभग ग्रिड पैटर्न के अनुरूप बनाई गई थीं।<br>vi. जल निकासी व्यवस्था की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी।<br>vii. पहले सड़कें और नालियाँ बिछाई गईं और फिर घर बनाए गए। हर घर की कम से कम एक दीवार सड़क के किनारे थी।<br>viii. निर्माण कार्य के लिए बहुत बड़े पैमाने पर श्रमिकों को जुटाने की आवश्यकता होगी। | अध्याय 1, पृष्ठ 5-7 | 3 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन किए जाने वाले कोई तीन अंक) | | |
| 23. | **महाभारत का विश्लेषण करने के लिए इतिहासकारों द्वारा देखे गए तत्वों की परख कीजिए**<br>i. इतिहासकार पाठ की भाषा की जांच करते हैं<br>ii. वे पाठ के प्रकार पर भी विचार करते हैं।<br>iii. वे लेखक के बारे में जानने की कोशिश करते हैं।<br>iv. साथ ही लक्षित दर्शक भी।<br>v. वे रचना की संभावित तिथि का पता लगाने का प्रयास करते हैं।<br>vi. साथ ही वह स्थान भी जहां उनकी रचना की गई होगी।<br>vii. इतिहासकार आमतौर पर महाभारत की विषय-वस्तु को दो व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं - कथात्मक और उपदेशात्मक।<br>viii. यह विभाजन खंडित नहीं है ।<br>ix. कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस कथा में रिश्तेदारों के बीच हुए वास्तविक संघर्ष की स्मृति संरक्षित की गई है।<br>x. महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत वेदों या प्रशस्तियों की तुलना में सरल है और संभवतः व्यापक रूप से समझी जाती थी।<br>xi. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन किए जाने वाले कोई तीन अंक) | अध्याय 3 पृष्ठ 72-74 | 3 |
| 24. | **कबीर की मुख्य शिक्षाओं की व्याख्या किजिए ।**<br>उत्तर :<br>i. कबीर चौदहवीं-पंद्रहवीं शताब्दी के ' निर्गुण ' कवि संत थे।<br>ii. कबीर ने परम सत्य के स्वरूप को शब्दों में व्यक्त किया।<br>iii. कबीर की उक्तियाँ जैसे कि "केवल ज फूल्या फूल बिन" या "समन्दरि लागि आग" कबीर के रहस्यमय अनुभवों की भावना को व्यक्त करती हैं। | अध्याय 6 पृष्ठ 160-162 | 3 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | iv. कबीर ने इस्लाम सहित कई परंपराओं का सहारा लिया, उन्होंने परम वास्तविकता को अल्लाह, खुदा , हजरत और पीर के रूप में वर्णित किया ।<br>v. उन्होंने वेदांतिक परंपराओं से लिए गए शब्दों का भी प्रयोग किया, जैसे अलख (अदृश्य), निराकार (निराकार), ब्रह्म, आत्मा आदि।<br>vi. उनकी कुछ कविताएँ इस्लामी विचारों पर आधारित हैं तथा हिंदू बहुदेववाद और मूर्ति पूजा पर प्रहार करने के लिए एकेश्वरवाद और मूर्तिभंजन का उपयोग करती हैं।<br>vii. उन्होंने ईश्वर के नाम को याद करने की हिंदू प्रथा को व्यक्त करने के लिए ज़िक्र और इश्क (प्रेम) की सूफी अवधारणा का उपयोग किया।<br>viii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई तीन अंक) | | |
| 25. | **(क) मुगल कृषक अर्थव्यवस्था में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका की व्याख्या कीजिए।**<br>उत्तर :<br>i. मुगल साम्राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था में महिलाएं पुरुषों के बराबर काम करती थीं<br>ii. वे फसल की बुवाई, निराई और मड़ाई में लगे हुए थे।<br>iii. श्रम का लिंग आधारित पृथक्करण संभव नहीं था, यद्यपि मासिक धर्म से संबंधित पूर्वाग्रह जारी रहे।<br>iv. महिलाएं शिल्प उत्पादन और कढ़ाई, सूत कातने में भी लगी हुई थीं।<br>v. कृषि समाज में उन्हें एक महत्वपूर्ण संसाधन माना जाता था जिसके कारण वधू-मूल्य और विधवा पुनर्विवाह जैसी प्रथाओं को स्वीकार किया गया।<br>vi. फिर भी, सामाजिक मानदंडों ने उन्हें नियंत्रित करने का प्रयास किया क्योंकि उन्हें एक प्रजनन शक्ति के रूप में देखा जाता था और घरों का मुखिया पुरुष सदस्य होता था तथा महिलाओं के जीवन पर कठोर नियंत्रण होता था।<br>vii. जमींदार वर्ग में महिलाओं को संपत्ति का उत्तराधिकार प्राप्त था और पंजाब के उदाहरण भी ग्रामीण भूमि बाजार में उनकी भागीदारी को दर्शाते हैं।<br>viii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | अध्याय 8, पृष्ठ 206-07 | 3 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | (मूल्यांकन हेतु कोई तीन अंक)<br><br>**या**<br><br>**(ख) मुगल साम्राज्य में जमींदारों की भूमिका की व्याख्या कीजिए।**<br>i. ज़मींदार ज़मीन के मालिक होते थे जिन्हें कुछ सामाजिक और आर्थिक विशेषाधिकार भी प्राप्त होते थे।<br>ii. वे कृषि पर निर्भर रहते थे लेकिन कृषि उत्पादन की प्रक्रियाओं में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेते थे।<br>iii. राज्य के लिए कुछ सेवाएं ( खिदमत ) निभाईं।<br>iv. ज़मींदारों के पास व्यापक निजी भूमि थी जिसे मिल्कियत कहा जाता था , जिसका अर्थ संपत्ति होता था।<br>v. ज़मींदार अपनी इच्छानुसार इन ज़मीनों को बेच सकते थे, वसीयत कर सकते थे या गिरवी रख सकते थे।<br>vi. ज़मींदार अक्सर राज्य की ओर से राजस्व एकत्र करते थे,<br>vii. वे घुड़सवार सेना, तोपखाने और पैदल सेना की इकाइयों सहित सैन्य संसाधनों को नियंत्रित करते थे।<br>viii. अधिकांश ज़मींदारों के पास किले ( किलाचा ) होते थे<br>ix. जमींदार स्पष्ट रूप से ग्रामीण सामाजिक पिरामिड के संकीर्ण शीर्ष का गठन करते थे।<br>x. ज़मींदारों ने ऋण सहित खेती के साधन उपलब्ध कराकर किसानों को बसाने में मदद की।<br>xi. ज़मींदार अक्सर बाज़ार ( हाट ) स्थापित करते थे।<br>xii. जमींदार एक शोषक वर्ग थे, लेकिन किसानों के साथ उनके संबंधों में पारस्परिकता, पितृसत्तात्मकता और संरक्षण का तत्व था।<br>xiii. राज्य के विरुद्ध संघर्ष में जमींदारों को अक्सर किसानों का समर्थन प्राप्त होता था।<br>xiv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br><br>(मूल्यांकन हेतु कोई तीन अंक) | अध्याय 8 पृष्ठ 211-212 | 3 |
| 26. | **बंगाल में पहाड़िया लोगों के प्रति ब्रिटिश नीति की व्याख्या कीजिए ।**<br>i. अंग्रेजों ने वनों की कटाई और स्थायी कृषि के विस्तार को प्रोत्साहित किया। | अध्याय 9, पृष्ठ | 3 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ii. वनों और चरागाहों के संकुचन ने पहाड़ियों के साथ संघर्ष को तीव्र कर दिया और औपनिवेशिक अधिकारियों ने उन्हें नियंत्रित करने और वश में करने की कोशिश की।<br>iii. पहाड़िया लोगों के सफाए की क्रूर नीति अपनाई और उन्हें मार डाला।<br>iv. 1780 के दशक में भागलपुर के कलेक्टर ऑगस्टस क्लीवलैंड ने शांति की नीति प्रस्तावित की।<br>v. ' पहाड़िया ' सरदारों को वार्षिक भत्ता दिया जाता था और उन्हें अपने लोगों के उचित आचरण के लिए जिम्मेदार बनाया जाता था।<br>vi. कई पहाड़िया सरदारों ने भत्ते लेने से इनकार कर दिया क्योंकि इसका मतलब था समुदाय के भीतर अधिकार का नुकसान।<br>vii. पहाड़िया लोग शत्रुतापूर्ण ताकतों से खुद को बचाने के लिए पहाड़ों में दूर चले गए और बाहरी लोगों के साथ युद्ध जारी रखा।<br>viii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई तीन अंक) | 238-240 | |
| 27. | **1857 की घटनाओं में दिल्ली के महत्व की व्याख्या कीजिए।**<br>i. विद्रोही सिपाहियों ने शस्त्रों की घंटी पर कब्जा कर लिया और गोरे लोगों पर हमला कर उनके बंगले और सरकारी इमारतें जला दीं।<br>ii. अगली सुबह (11 मई) सिपाही मेरठ से दिल्ली पहुंचे और मुगल सम्राट से मुलाकात की तथा विद्रोह को अपना आशीर्वाद दिया।<br>iii. शहर के आम लोग भी विद्रोह में शामिल हो गये।<br>iv. यह खबर फैल गई कि दिल्ली विद्रोहियों के हाथों में चली गई है और बहादुर शाह ने विद्रोह को आशीर्वाद दे दिया है।<br>v. गंगा घाटी में स्थित छावनियाँ एक के बाद एक विद्रोह में उठ खड़ी हुईं।<br>vi. यद्यपि मुगल सम्राट के पास कोई शक्ति नहीं थी, फिर भी लोकप्रिय कल्पना में वह कभी महान मुगल साम्राज्य का पर्याय था। | अध्याय. 10, पृ. 258, 259, 275, 276 | 3 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | vii. विद्रोह के दमन के दौरान अंग्रेजों को भी दिल्ली के प्रतीकात्मक महत्व का एहसास हुआ ।<br>viii. 1858 तक दिल्ली पर पुनः कब्ज़ा करने के लिए अंग्रेजों ने कलकत्ता और पंजाब से दोतरफा हमला किया।<br>ix. पूरे उत्तर भारत से विद्रोही दिल्ली की रक्षा के लिए आये थे।<br>x. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु.<br>(मूल्यांकन हेतु कोई तीन अंक) | | |
| | **खंड ग**<br>**(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)** | | |
| 28. | **(क) जैन धर्म की शिक्षाओं और दर्शन की व्याख्या कीजिए।**<br>i. जैन धर्म में सबसे महत्वपूर्ण विचार यह है कि संपूर्ण विश्व चेतन है:<br>ii. यहां तक कि पत्थर, चट्टान और पानी में भी जीवन है।<br>iii. जीवित प्राणियों, विशेषकर मनुष्यों, पशुओं, पौधों और कीड़ों को क्षति न पहुँचाना जैन दर्शन का केन्द्रीय सिद्धांत है।<br>iv. अहिंसा का सिद्धांत<br>v. जैन शिक्षाओं के अनुसार , जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के माध्यम से आकार लेता है।<br>vi. कर्म के चक्र से मुक्त होने के लिए तप और तपस्या की आवश्यकता होती है।<br>vii. यह संसार का त्याग करके प्राप्त किया जा सकता है।<br>viii. मठवासी अस्तित्व मोक्ष की एक आवश्यक शर्त है।<br>ix. जैन साधु-साध्वियां पांच व्रत लेती थीं: हत्या, चोरी और झूठ से दूर रहना; ब्रह्मचर्य का पालन करना; और संपत्ति रखने से दूर रहना।<br>x. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई आठ अंक)<br>**या** | अध्याय 4<br>पृष्ठ 88 | 8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **साँची स्तूप की मूर्तिकला की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।**<br>i. सांची की मूर्तिकला को जातक जैसे बौद्ध ग्रंथों के ज्ञान से समझा जा सकता है उदाहरण के लिए वेसंतरा तोरण पर जातक .<br>ii. बुद्ध की जीवनी से परिचित होने से बुद्ध के चित्रण को मानव रूप में नहीं बल्कि प्रतीकों के रूप में समझने में मदद मिलती है, जो उनके जीवन की घटनाओं को दर्शाते हैं।<br>iii. खाली सीट - ध्यान<br>iv. स्तूप – महापरिनिर्वाण<br>v. पहिया – पहला उपदेश<br>vi. बोधि वृक्ष – ज्ञानोदय<br>vii. इसमें गैर-बौद्ध, लोकप्रिय तत्वों की भी उपस्थिति है जो दृश्य को समृद्ध बनाती है।<br>viii. शालभंजिका - एक स्त्री का शुभ प्रतीक जिसके स्पर्श से वृक्षों में फूल खिलते हैं<br>ix. हाथी, घोड़े, बंदर और मवेशी सहित जानवरों को जीवंत दृश्य बनाने और आगंतुकों को आकर्षित करने के लिए उकेरा गया था।<br>x. हाथी जैसे जानवरों को शक्ति और बुद्धि का प्रतीक माना जाता था।<br>xi. छवि की पहचान माया - बुद्ध की माता / गजलक्ष्मी - हाथियों से जुड़ी सौभाग्य की देवी के रूप में की गई है।<br>xii. कई स्तंभों पर सर्प की आकृति भी पाई गई है और संभवतः यह लोकप्रिय परंपराओं से ली गई है।<br>xiii. स्तूप स्वयं मिट्टी का एक अर्ध-वृत्ताकार टीला ( अंडा ) था, लेकिन धीरे-धीरे अधिक जटिल होता गया।<br>xiv. अण्डा के ऊपर हर्मिका थी - बालकनी जैसी संरचना जो देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करती थी।<br>xv. इससे मस्तूल - यस्ती उत्पन्न हुआ जिसके ऊपर छतरी या छतरी लगी हुई थी।<br>xvi. टीले के चारों ओर लगी रेलिंग पवित्र और धर्मनिरपेक्ष भागों को अलग करती है। बांस और लकड़ी की बाड़ जैसी पत्थर की रेलिंग सांची और बरहुत स्तूपों में देखी जा सकती है। | अध्याय 4 पृष्ठ 99 -103 | 8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | xvii. प्रवेश द्वार चार प्रमुख बिंदुओं पर स्थापित किए गए थे<br>xviii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई आठ अंक) | | |
| 29. | **(क) " गाँधीवाद राष्ट्रवाद में असहयोग आंदोलन महत्वपूर्ण था।" इस कथन को न्यायसंगत ठहराएँ।**<br>i. गांधीजी का एक जननेता के रूप में उदय।<br>ii. असहयोग आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक अभिजात्य आंदोलन से एक लोकप्रिय जन आंदोलन में बदल दिया।<br>iii. सत्याग्रह और अहिंसा की अवधारणाओं की राष्ट्रव्यापी लोकप्रियता ।<br>iv. रौलट एक्ट और जलियांवाला बाग कांड के विरोध में असहयोग आंदोलन बाग नरसंहार ।<br>v. स्वराज की मांग ।<br>vi. गांधीजी ने असहयोग और खिलाफत आंदोलन को एक साथ लाकर दोनों समुदायों को एकजुट किया।<br>vii. एकजुट होकर, दो प्रमुख धार्मिक समुदाय अर्थात् हिंदू और मुस्लिम सामूहिक रूप से औपनिवेशिक शासन को समाप्त कर सकते हैं।<br>viii. स्वदेशी और बहिष्कार को एक उपकरण के रूप में उपयोग करें ।<br>ix. छात्रों ने स्कूल, कॉलेज जाने से मना कर दिया।<br>x. वकीलों ने अदालतों में जाना बंद कर दिया ।<br>xi. मजदूर वर्ग हड़ताल पर चला गया।<br>xii. आंध्र प्रदेश में जनजातियों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया ।<br>xiii. अवध में किसानों ने कर देना बंद कर दिया।<br>xiv. असहयोग, भारत और गांधीजी के जीवन में एक युग का नाम बन गया।<br>xv. इसमें इनकार, त्याग और आत्म-अनुशासन शामिल था।<br>xvi. यह स्वशासन के लिए प्रशिक्षण था।<br>xvii. असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप ब्रिटिश राज की नींव हिल गई।<br>viii. चौरी में पुलिस थानों को जलाने की अप्रिय घटना के कारण गांधीजी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। चौरा में कई कांस्टेबल जलकर मर गये। | अध्याय - 11, पृ.290, 291 | 8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | xix. असहयोग आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया और गांधीजी को मार्च 1922 में गिरफ्तार कर लिया गया, उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया और उन्हें छह साल के कारावास की सजा सुनाई गई।<br>xx. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(किसी भी 8 अंक का मूल्यांकन किया जाएगा)<br>**या**<br>**(ख) ''गांधीजी को गरीबों के प्रति गहरी सहानुभूति के तहत एक 'जन नेता' के रूप में देखा जाने लगा।'' कथन का परख कीजिए।**<br>i. फरवरी 1916 में बी.एच.यू के उद्घाटन के अवसर पर गांधीजी ने विशेष आमंत्रित अतिथियों से कहा था कि "भारत का तब तक उद्धार नहीं हो सकता जब तक आप अपने इस आभूषण को उतारकर भारत में अपने देशवासियों के लिए इसे सुरक्षित नहीं रख लेते।"<br>ii. उनका मानना था कि मुक्ति केवल किसान के माध्यम से ही मिल सकती है। न तो वकील, न डॉक्टर, न ही धनी ज़मींदार इसे प्राप्त कर सकते हैं।<br>iii. चंपारण सत्याग्रह<br>iv. अहमदाबाद मिल हड़ताल<br>v. खेड़ा सत्याग्रह<br>vi. गांधीजी भारतीय किसानों के लिए एक उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट हुए , जो उन्हें उच्च करों और दमनकारी अधिकारियों से बचाएंगे और उनके जीवन में सम्मान और स्वायत्तता बहाल करेंगे।<br>vii. 1921 में, दक्षिण भारत के दौरे के दौरान, गांधीजी ने गरीबों से जुड़ाव के लिए अपना सिर मुंडवा लिया और लंगोटी पहनना शुरू कर दिया।<br>viii. उनका नया रूप तप और संयम का प्रतीक भी बन गया।<br>ix. चरखा ने गरीबों को अतिरिक्त आय उपलब्ध कराई और उन्हें आत्मनिर्भर बनाया।<br>x. गरीबों, विशेषकर किसानों के बीच गांधीजी की लोकप्रियता उनकी तपस्वी जीवनशैली तथा धोती और चरखे जैसे प्रतीकों के चतुराईपूर्ण प्रयोग के कारण बढ़ी।<br>xi. महात्मा गांधी जी जाति से व्यापारी थे और पेशे से वकील थे; लेकिन उनकी सरल जीवनशैली और अपने हाथों से काम करने के प्रति प्रेम ने उन्हें मेहनतकश गरीबों | अध्याय - 11, पृष्ठ 292, 294 | 8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | के साथ पूरी तरह से सहानुभूति रखने में सक्षम बनाया और बदले में, गरीबों ने भी उनके साथ सहानुभूति रखी।<br>xii. जमीनी स्तर पर रचनात्मक कार्यक्रम ने सामाजिक और आर्थिक सुधार को बढ़ावा दिया जिससे जन आंदोलन में आवश्यक अनुशासन और प्रशिक्षण उपलब्ध हुआ।<br>xiii. इसमें हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना शामिल था।<br>xiv. महिलाओं का उत्थान<br>xv. अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष- हरिजनों का उत्थान<br>xvi. श्रम की गरिमा<br>xvii. आर्थिक आत्मनिर्भरता<br>viii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(किसी भी 8 अंक का मूल्यांकन किया जाएगा) | | |
| 30. | **भारतीय इतिहास में विजयनगर साम्राज्य के महत्व का वर्णन कीजिए।**<br>i. विजयनगर में पाई गई संरचनाओं की विस्तृत श्रृंखला रायों की दृष्टि को प्रतिबिंबित करती है ;<br>ii. रायों का संसाधनों और धन पर नियंत्रण था और वे अपनी शक्ति का उपयोग कर सकते थे। ऐसी शानदार इमारतों के निर्माण के लिए श्रमिकों और कुशल कारीगरों की आवश्यकता होती है।<br>iii. राजधानी - विजयनगर योजनाबद्ध तरीके से स्थान के संगठन को दर्शाता है और समकालीन सौंदर्यशास्त्र और वास्तुशिल्प विचारों के आत्मसात पर भी प्रकाश डालता है।<br>iv. किलेबंदी की सात पंक्तियाँ जिनमें कृषि क्षेत्र भी शामिल थे, सुरक्षा और रक्षा के लिए चिंता का संकेत देती हैं।<br>v. जलाशय और चैनल - राज्य की पहल से निर्मित कमलापुरम टैंक और हिरिया नहर, शुष्क भूभाग में जल संरक्षण के प्रति चिंता को दर्शाते हैं।<br>vi. शहरी केन्द्र में सड़कें, मस्जिदें, मंदिर, कुएं और तालाब जैसी संरचनाएं तथा साहित्य में आम लोगों के घरों के संदर्भ व्यापार के प्रति उनके संरक्षण को दर्शाते हैं।<br>vii. शाही केंद्र में कई इमारतें हैं जो राया के जीवन से जुड़ी हैं - उनके निवास के लिए महल, | अध्याय 7, पृष्ठ 177-188 | 8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | viii. प्रशासनिक परिषद की बैठकों के लिए लोटस महल ,<br>ix. हाथियों के अस्तबल,<br>x. महानवमी डिब्बा का उत्सवों के दौरान अनुष्ठानिक महत्व था और सांस्कृतिक प्रदर्शन के दौरान रायों द्वारा नायकों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता था।<br>xi. दर्शक हॉल<br>xii. हजाराराम मंदिर तथा लगभग 60 अन्य मंदिर संभवतः उनके विश्वास और चुने हुए देवता की पूजा के सूचक थे ।<br>xiii. विजयनगर के रायों ने अपनी दिव्य स्थिति स्थापित करने और प्रजा के साथ संबंध स्थापित करने के लिए मंदिरों से संबंध बनाए।<br>xiv. उन्होंने मंदिरों को अनुदान दिया और प्रार्थनाओं और उत्सवों का नेतृत्व किया ।<br>xv. मंदिर परिसरों में गोपुरम और मंडपों का निर्माण करके मंदिर वास्तुकला को बढ़ाया<br>xvi. रायों के शासनकाल में विरुपाक्ष मंदिर का विस्तार किया गया तथा कृष्णदेव राय ने पूर्वी गोपुरम का निर्माण करवाया।<br>xvii. विठ्ठल मंदिर: यह दर्शाता है कि किस प्रकार विजयनगर के शासकों ने साम्राज्यवादी संस्कृति के निर्माण के लिए विभिन्न परम्पराओं का सहारा लिया।<br>xviii. मंदिर के गोपुरम से सीधी रेखा में रथ मार्ग फैले हुए थे, जहां व्यापारी अपनी दुकानें लगाते थे।<br>xix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(कोई भी 8 प्रासंगिक बिंदु)<br>**या**<br>**विजयनगर साम्राज्य की धार्मिक वास्तुकला परम्पराओं का वर्णन कीजिए ।**<br>i. विजयनगर की राजधानी के स्थान का चयन करने में मदद की होगी ।<br>ii. बाली और सुग्रीव के राज्य को आश्रय दिया<br>iii. पम्पादेवी का मंदिर जिसका संरक्षक देवता के साथ विवाह उत्सव आज भी मनाया जाता है।<br>iv. विजयनगर पूर्व जैन मंदिरों की उपस्थिति । | अध्याय 7, पृष्ठ 184-188 | 8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | v. शासकों ( पल्लव , चालुक्य , होयसल , चोल) ने मंदिर निर्माण को ईश्वर से पहचान करने के साधन के रूप में प्रोत्साहित किया और उन्हें शिक्षा के केंद्र के रूप में बढ़ावा दिया।<br>vi. मंदिरों के निर्माण, मरम्मत और रखरखाव के लिए अनुदान लोकप्रिय समर्थन का स्रोत थे।<br>vii. विजयनगर राय भगवान विरुपाक्ष की ओर से शासन करते थे जिनके नाम पर सभी शाही आदेश हस्ताक्षरित और प्रयुक्त होते थे।<br>viii. राजकीय प्रतिकृति मूर्तियाँ मंदिरों में प्रदर्शित की जानें लगीं और राजा की मंदिरों की यात्राओ को महत्वपूर्ण राजकीय अवसर माना जाने लगा जिन पर साम्रज्या के महत्वपूर्ण नायक भी उसके साथ जाते थे।<br>ix. राय गोपुरम या शाही प्रवेशद्वार केन्द्रीय देवालयों की मीनारों के सामने बौने लगते थे तथा दूर से ही मंदिर की उपस्थिति का संकेत देते थे ।<br>x. मंदिर परिसर के भीतर मंडप और लम्बे स्तंभयुक्त गलियारे थे ।<br>xi. कृष्णदेव राय के शासनकाल के दौरान विरुपाक्ष मंदिर का विस्तार किया गया, जिसमें मुख्य मंदिर के सामने हॉल और पूर्वी गोपुरम बनाया गया ।<br>xii. मंदिरों के हॉल में धार्मिक उत्सव और नृत्य, संगीत और नाटक के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए ।<br>xiii. महाराष्ट्र में पूजे जाने वाले भगवान विष्णु के स्वरूप को समर्पित रथ के रूप में निर्मित विट्ठल मंदिर, विजयनगर के शासकों द्वारा एक शाही संस्कृति के निर्माण का संकेत देता है।<br>xiv. मंदिर के गोपुरम से सीधी रेखा में पक्की सड़कें फैली हुई थीं, जिनके किनारे स्तंभों वाले मंडप बने हुए थे, जिनमें व्यापारी अपनी दुकानें लगाते थे।<br>xv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई भी 8 प्रासंगिक बिंदु) | | |
| | **खंड घ**<br>**(स्रोत-आधारित प्रश्न)** | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 31. | **"खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं "**<br>**जी.बी. पंत ने लोकतंत्र में आत्म-अनुशासन के महत्व पर जोर क्यों दिया?**<br>उत्तर : i . लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति को आत्म-अनुशासन की कला में प्रशिक्षित होना चाहिए।<br>ii . लोकतंत्र में व्यक्ति को अपनी कम और दूसरों की अधिक चिंता करनी चाहिए।<br>iii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु)<br>**(31.2) निष्ठा का क्या अर्थ है ?**<br>1. सभी निष्ठाएं विशेष रूप से राज्य के प्रति केन्द्रित होनी चाहिए।<br>ii . लोगों को केवल समुदाय और स्वयं पर ध्यान केंद्रित करना बंद कर देना चाहिए।<br>iii . वफादारी में कोई विभाजन नहीं हो सकता।<br>iv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु)<br>**(31.3) उनके अनुसार लोकतंत्र की सफलता की कुंजी क्या है ?**<br>i . गोविंद बल्लभ पंत ने तर्क दिया कि सफल होने के लिए व्यक्ति को आत्म-अनुशासन की कला में प्रशिक्षित होना चाहिए।<br>ii. व्यक्ति को अपनी कम और दूसरों की अधिक चिंता करनी चाहिए।<br>iii . वफादारी में कोई विभाजन नहीं हो सकता.<br>4. वफादारी विशेष रूप से राज्य के प्रति केन्द्रित होनी चाहिए।<br>v. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई दो अंक) | अध्याय 12, पृष्ठ 330 | 1<br><br>1<br><br>2 |
| 32. | **प्रभावती गुप्त और दंगुन गाँव**<br>**प्रभावती गुप्त द्वारा भूमि अनुदान किसे दिया गया था?** | अध्याय 2, पृष्ठ 41 | 1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 1.आचार्य चनालस्वामी को धार्मिक पुण्य के लिए भूमि अनुदान दिया गया ।<br>ii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु)<br>**(32.2) यह स्रोत हमें महिलाओं द्वारा संपत्ति के स्वामित्व के बारे में क्या सूचित करता है?**<br>i . रानी प्रभावती के पास जमीन थी और उन्होंने उसे दान भी दिया था।<br>धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र जैसे धार्मिक ग्रंथों के अनुसार महिलाओं को संपत्ति रखने की अनुमति नहीं थी।<br>iii.यह नियम सर्वव्यापी नहीं था।<br>iv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु) | | 1 |
| | **(32.3) भूमि अनुदान प्राप्तकर्ताओं को क्या विशेषाधिकार दिए गए थे ?**<br>i. दंगुन गाँव के निवासियों को अनुदान प्राप्तकर्ता के सभी आदेशों का पालन करने का निर्देश दिया गया था।<br>ii. इस गांव में सैनिकों और पुलिसकर्मियों का प्रवेश वर्जित था;<br>iii. (यह) घास, बैठने के लिए पशुओं की खाल और भ्रमणशील शाही अधिकारियों को कोयला उपलब्ध कराने के दायित्व से मुक्त है;<br>iv. मदिरा खरीदने और नमक खोदने (के शाही विशेषाधिकार) से छूट;<br>v. खदिरा वृक्षों के अधिकार से छूट ;<br>vi. फूल और दूध (आपूर्ति करने के दायित्व) से छूट;<br>vii. (यह दान किया जाता है) साथ में छिपे हुए खजाने और जमा (और) का अधिकार<br>viii. प्रमुख और लघु करों के छुट<br>ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(कोई भी 2 अंक निर्धारित किये जायेंगे।) | | 2 |
| 33. | **यूरोप के लिए एक चेतावनी**<br>**(33.1) यूरोपीय राजाओं को बर्नियर ने क्या चेतावनी दी?** | अध्याय 5, | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **i.** बर्नियर ने चेतावनी दी थी कि यदि यूरोपीय राजा मुगल मॉडल का अनुसरण करेंगे तो उनके राज्य अच्छी तरह से खेती और आबादी से बहुत दूर होंगे,<br>**ii.** यह इतना अच्छी तरह से निर्मित, इतना समृद्ध, इतना विनम्र और समृद्ध भी नहीं होगा जैसा कि हम उन्हें देखते हैं।<br>**iii.** वे रेगिस्तान और एकांत के राजा बन जाएंगे,<br>**iv.** वे भिखारियों और बर्बर लोगों के राजा बन जाएंगे<br>**v.** हम उन महान शहरों और नगरों को खराबह हवा के कारण न रहने योग्य अवस्था में पाएँगे<br>**vi.** शहर बर्बाद हो जाएंगे , क्योंकि कोई भी उनकी मरम्मत का ध्यान नहीं रखेगा;<br>**vii.** पहाड़ियों को छोड़ दिया जाएगा<br>viii. खेत झाड़ियों से भरे हुए हैं, या महामारी फैलाने वाले दलदलों से भरे हुए हैं ।<br>ix. बर्नियर ने यूरोपीय राजाओं को चेतावनी दी कि उन्हें किसी भी तरह से ताज के स्वामित्व का मुगल मॉडल नहीं अपनाना चाहिए, जो मुगल ग्रामीण इलाकों और किसानों की बर्बादी का कारण था।<br>x. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु) | पृष्ठ 132 | 1 |
| | **(33.2) उसने यूरोपीय राजाओं और मुगल बादशाहों की तुलना किस प्रकार की?**<br>i . यूरोपीय मॉडल की समृद्धि पर जोर दिया गया है जबकि मुगल सम्राटों को बर्बर और भिखारियों का राजा कहा गया है।<br>ii . यूरोपीय मॉडल की श्रेष्ठता पर बल दिया गया है जबकि मुगल सम्राटों को निम्न बताया गया है।<br>iii. यूरोपीय राजा अन्यथा अमीर और शक्तिशाली हैं और उनकी सेवा बहुत बेहतर और अधिक शाही तरीके से की जाती है।<br>iv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु।<br>(मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु) | | 1 |
| | **(33.3) . बर्नियर ने मुगल देहात का वर्णन कैसे किया?** | | 2 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | i . बर्नियर ने मुगल ग्रामीण इलाकों की निराशाजनक स्थिति का चित्रण किया है<br>ii. उनके अनुसार यह दयनीय और बर्बाद स्थिति में था<br>iii. इसके खेत "झाड़ियों से भरे हुए" थे<br>iv. यह "महामारी दलदल" से भरा हुआ था ।<br>v. बर्नियर ने मुगल राज्य को एक शोषक राज्य के रूप में देखा, जिसमें अल्पसंख्यक अभिजात वर्ग ने अधीनस्थ आबादी के एक विशाल हिस्से पर अत्याचार किया और उस पर प्रभुत्व जमाया।<br>vi. उनके अनुसार मुगल साम्राज्य में कोई मध्यम वर्ग नहीं था<br>vii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु।<br>(किसी भी 2 बिंदुओं तक पहुंच बनाई जानी है।) | | |
| 34. | **(34.1) भारत के दिए गए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर निम्नलिखित को उपयुक्त प्रतीकों से चिह्नित करें और नामांकित करें:**<br>( i ) कालीबंगन – हड़प्पा स्थल<br>(ii)(a) विजयनगर - विजयनगर साम्राज्य की राजधानी- हम्पी / विजयनगर<br>या<br>(ii) (b) दिल्ली - मुगलों के अधीन क्षेत्र<br>(iii) अमरावती – बौद्ध स्थल | अध्याय 1 पृष्ठ .2<br>अध्याय 7 पृष्ठ 17<br>अध्याय 8 पृष्ठ 214<br>अध्याय 4 पृष्ठ 95 | 1<br>1<br>1<br>1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **(34.2) भारत के इसी राजनीतिक रेखा मानचित्र पर 1857 के विद्रोह के केन्द्र के रूप में दो स्थानों को 'A' और 'B' से अंकित किया गया है । इन्हें पहचानिए और उनके पास खींची गई रेखाओं पर उनके सही नाम लिखिए।**<br>A- झांसी<br>b- बैरकपुर / कलकत्ता | अध्याय 10 पृष्ठ 275 | 2 |
| | **नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए हैं, प्रश्न संख्या 34 के स्थान पर:**<br>**(34.1) किन्हीं दो विकसित हड़प्पा स्थलों के नाम बताइए।**<br>उत्तर: हड़प्पा / मोहनजोदड़ो / लोथल / राखीगढ़ी / कालीबंगन / धोलावीरा / चन्हुदड़ो / नागेश्वर / बालाकोट / कोट दीजी / अंबी / सुक्तगेंडोर / बनावली<br>कोई अन्य प्रासंगिक साइट<br>(कोई 2 उल्लेखित करें) | अध्याय 1 पृष्ठ 2 | 2 |
| | विजयनगर साम्राज्य की राजधानी का नाम बताइए ।<br>उत्तर : विजयनगर / हम्पी<br>(मूल्यांकन हेतु कोई भी) | अध्याय 7 पृष्ठ 174 | 1 |
| | या<br>**(34.2) (ख) मुगल साम्राज्य के अधीन किसी एक क्षेत्र का नाम बताइए।**<br>आगरा/अजमेर/दिल्ली/ पानीपत /लाहौर/काबुल/ कंधार /आमेर<br>कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>(मूल्यांकन हेतु कोई भी) | अध्याय 8 पृ.214 | 1 |
| | **( 34.3) भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के किन्हीं दो केन्द्रों के नाम बताइए।** | अध्याय 11 | 2 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | दिल्ली/ खेड़ा /कलकत्ता/अमृतसर/ बारडोली / चंपारण /अहमदाबाद/नागपुर/मद्रास/ लखनऊ<br><br>कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br><br>(किन्हीं दो का मूल्यांकन किया जाना है)<br><br> 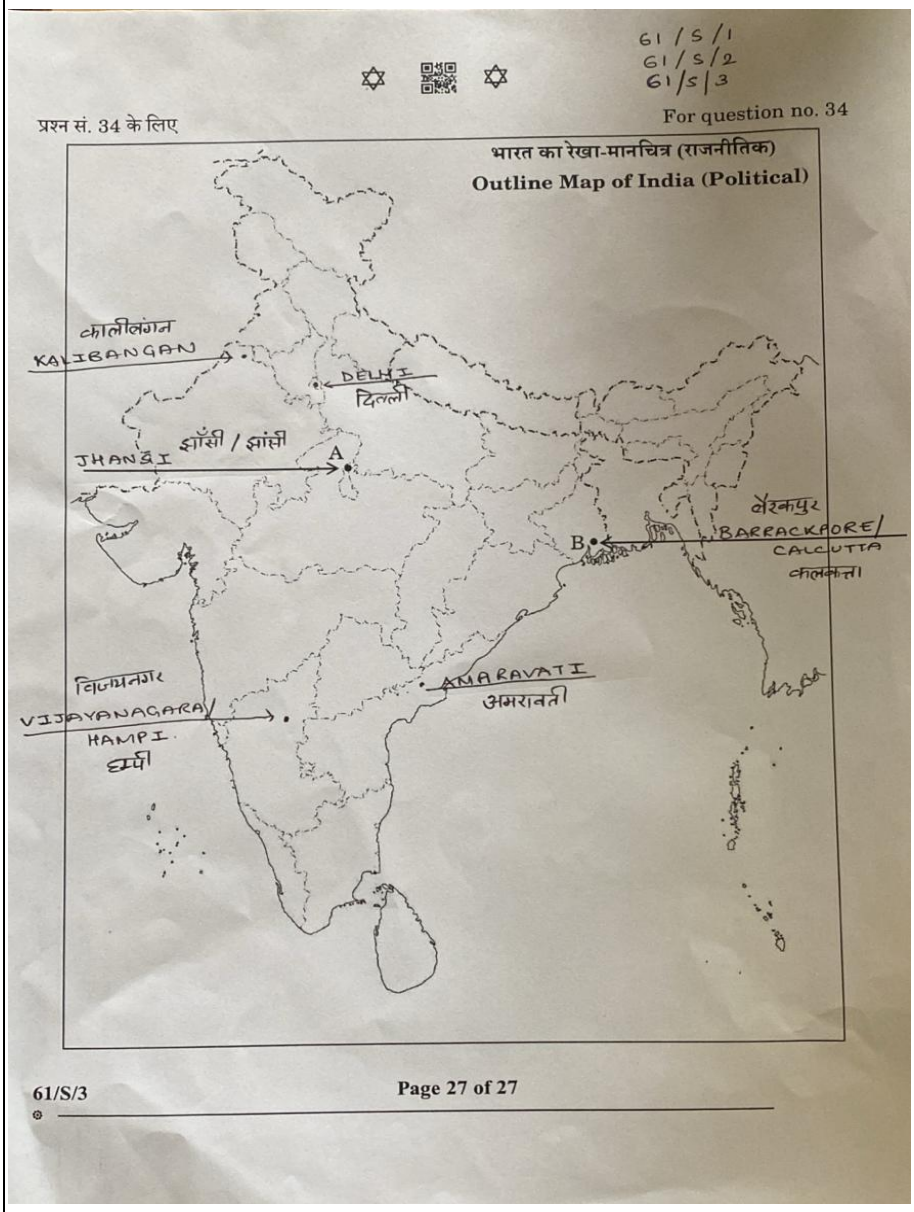 <br> | | |